लिखने में होना

सुशील शुक्ल

इतनी संजीदगी से मैंने अपने लिखने के बारे में कभी नहीं सोचा। हां, पर दूसरे लेखकों की रचनाएं पढ़कर उनके लिखने के बारे में जरूर सोचा। वह रचना कैसे संभव हुई होगी इस रास्ते पर सोचा। यह और बात है कि कोई रचना कैसे आती है इस बात की भी रचना ही करते हैं। और बताते हैं। कोई रचना अच्छी लगती है तो उसे पढ़ लेने के बाद उस पर विचार करने का एक सिलसिला शुरू होता है मैं सोचता रहता हूं कि उस रचना में आनंद का स्रोत क्या है? उसकी कहन, उसकी बात या कंटेट सब पर सोचता हूं। अकसर उस रचना को सजीव करके देखता हूं। यह मेरी पुरानी आदत है। तुलसी की मानस कथा पढ़कर मैं उसके बारे में सोचने लगता था। दूसरी-तीसरी के दिनों में मुझे हनुमान का किरदार बहुत पसंद था। खासकर जब हनुमान सुरसा के सामने आते थे- जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा, तासू दून कपि रूप दिखावा। सत योजन तेहि आनन कीन्हा, अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।

मुझे ताज्जुब होता था कि इस कहानी में राम और उनके भाइयों के बचपन के बारे में इतने तफ्सील से बताया गया है पर किसी राक्षस का वैसा वर्णन नहीं मिलता। मैं जानना चाहता था कि राक्षस बच्चे कैसे होते होंगे? कैसे रहते होंगे? कहां पढ़ते होंगे? क्या खेल खेलते होंगे?

आज उस पाठ को याद करता हूं जो हमारी पाठ्यपुस्तकों में होता था। दीवाली नाम से। दीवाली में राम घर आए हैं और अयोध्या में जश्न मनाया जा रहा है। जब मैं इसकी कल्पना करता था तो मुझे राम लौटते दिखते थे। उनके कंधे पर धनुष लटक रहा है। उनके पीछे-पीछे युद्ध में बची सेना चल रही है। मैं एक ऐसे राम की कल्पना करता था जो युद्ध से दुखी है। जो अयोध्या लौटने से पहले लंका जाना चाहता है। जहां मातम छाया हुआ होगा। युद्ध का उजाड़ देखकर अयोध्या लौटा मेरा राम अयोध्या वासियों से कहेगा ही कहेगा कि दीपक युद्ध में मारे गए लोगों की याद में जलाओ। ...कोई भी चीज देखता था या पढ़ता था तो मन में लिखी रचना से एक पढ़ी रचना बनती थी।

यह 83-84 की बात होगी। अगर किसी को चिट्ठी लिखनी होती थी तो मेरे पिता ही लिखते थे। उनकी हैंडराइटिंग अच्छी थी। बहुत अच्छी थी। वे किसी अक्षर को ऐसे बनाते थे कि जैसे उसे बनाया नहीं गया है, वह खुद अपनी मर्जी से आया है। उसकी रेखाएं शान्त और लयात्मक होती थीं। पर जब मां मेरी बहिन को चिट्ठी लिखना चाहती तो वह मुझसे लिखवाती। उसे संकोच रहता कि पिता बेटी के लिए ज्यादा कुछ नहीं लिख सकते। ससुराल में वह खत शायद सबके सामने पढ़ा जाए। मां बोलती जातीं- परम आदरणीय दीदी, हम सब यहां कुशल से हैं और आप सबकी कुशलता की कामना मां रेवा से करते हैं। इसके बाद वे मेरी बहिन की ससुराल के बारे में दो-तीन बातें लिखने को कहतीं। फिर एक वाक्य होता - दीदी, आपकी तबियत तो ठीक है न। कोई भी दो व्रत लगातार मत रखना। फिर कुछेक वाक्य उस परिवार के बारे में लिखे जाते। फिर बहिन को एकाध बात बोल दी जाती। इस चिट्ठी के लिखे जाने के बहुत वर्षों के बाद एक दिन आज

से कोई चौदह वर्ष पहले मैं एक बच्चे की रचनाएं पढ़ रहा था। उसने अपनी कक्षा के बारे में लिखा था - उस दिन हमारी टीचर देर से आई थीं। उन्होंने हाजिरी का रजिस्टर खोला। रजिस्टर में तीन-चार नाम बोले तो पता चला कि वो किसी दूसरी क्लास का रजिस्टर लेकर आ गई थीं। मैंने उमा की तरफ देखा। वो भी मेरी तरफ देख रही थी। हम दोनों हंसे। और इस तरह वो हर बार कक्षा के बारे में तीन-चार चीजें बताता और फिर उमा के बारे में एक वाक्य लिखता - मैंने उमा की तरफ देखा तो वह भी मेरी तरफ देख रही थी। ...यह वही युक्ति थी। इस रचना में कहने को ज्यादातर बातें कुछ और हैं। और पढ़ने वाले को पहली नजर में लग सकता है कि लिखने वाला कक्षा के बारे में कुछ कह रहा है। मगर आप देखेंगे कि उस रचना में सिर्फ एक वाक्य है - मैंने उमा की तरफ देखा। उमा ने मेरी तरफ देखा।

जब अपने लेखन के बारे में सोचता हूं तो एसी ही चीजें झिलमिलाती हैं। किसी ने मुझे कंटेट के बारे में सिखाया किसी ने मुझे कहने की कला यानी उसके क्राफ्ट के बारे में बताया।

83-84 के दिनों हमारे गांव में बिजली नहीं थी। इंदिरा गांधी के बीस सूत्री कार्यक्रम के अनगिनत पोस्टर हमारे गांव में आए थे। जाने किस तरह उन रंगीन पोस्टरों में से कुछेक मेरे हाथ लग गए। मैंने अपने घर की सारी बाहरी दीवारों पर लेई से उन्हें चिपका दिया था। हम दिन-रात उन पोस्टरों को पढ़ने की कोशिश करते। हमारे एक पड़ोसी बहुत अच्छी तुकबंदी करते थे। वे चुटकियों में नारे बना लेते थे। हर पार्टी के आदमी उनसे नारे लिखवाने आते थे। - इंदिरा गांधी की अंतिम इच्छा, पढ़ो लिखो और मांगो भिक्षा। मुझे इंदिरा गांधी अच्छी लगती थीं। उनका एक पाठ तीसरी में था- इंदिरा की वानर सेना नाम से। जिसे मैं कितनी ही बार मां को पढ़कर सुनाता था। मेरी मां की एक सखी हुआ करती थीं। वे अकसर वह पाठ सुनाने को कहती थीं। इन सबकी वजह से इस नारे से मेरा मन थोड़ा दुखी हुआ। मुझे जहां तक याद है उस समय हिम्मत सिंह बीजेपी के उम्मीदवार थे। हमारे साथी नारा लगाते थे- इंदिरा गांधी की अंतिम इच्छा पढ़ो लिखो और मांगो भिक्षा। मैं लगाता था हिम्मत सिंह की अंतिम इच्छा पढ़ो लिखो और मांगो भिक्षा।

मेरे लिखने के सफर में आल्हा ऊदल, भागवत आदि की कथाएं खासकर क्षेपक कथाएं, भजन मंडलियां, चरवाहों के किस्से, कोतवाल की मुनादी जैसी अनेक चीजें शामिल हैं।

आज लिखने में होना एक साथ आज में और उन सब दिनों में एक साथ होने की तरह लगता है। जैसे मैंने कभी राम को बचाया था। अयोध्या में जश्न मनाने से रोककर। इसी तरह मैं अपने ही लिए ज्यादा, बार-बार चीजों को बचाने की कोशिश करता हूं। और अकसर देखता हूं कि अगर कोई बचता है तो वह पूरी दुनिया के लिए भी बच जाता है। बड़े से बड़े दुर्दांत आतंकवादी मारे जाते हैं। उनकी मृत्यु का जश्न मनाया जाता है। मैं उन्हें बचाने उनके बचपन में जाता हूं। जब वे संभावना से भरे हुए एक जीवन में प्रवेश कर रहे होते हैं। और यह लिखकर जैसे एक प्रायश्चित भी करता हूं कि देर हो गई। बचपन को ऐसे बड़प्पन तक पहुंचने से पहले बचाना था।

लिखकर असल में सबसे पहले मैं खुद को बचाता हूं।

बार-बार बचपन को याद करके अपना बचपन बचाता हूं। और उन लोगों को जो मेरे साथ थे। उन घासों को, गायों को, कुत्तों को, केंचुओं को और चीटियों को। उन सब किस्सों को जो लिख लिए गए। और उन सब किस्सों को जो दर्ज न किए गए। इसलिए मैं लिखता हूं तो इसमें दूसरा कोई नहीं होता है। पाठक भी नहीं।

लिखना शुरू करते समय पाठक को कुछ बताने के लिए नहीं अपने सुख-चैन के लिए रचना लिखना होता है। अगर मैं तय करूं कि मैं फलां पाठक को कुछ बताने के लिए एक रचना लिख रहा हूं तो उसी क्षण मैं अपनी दुनिया में एक ऐसे व्यक्ति की रचना कर रहा होता हूं जो मुझसे कमतर है। मैं जानता हूं और वह नहीं जानता है। और मैं जो जानता हूं वह उसके जीवन के लिए जरूरी है। जो उसके जीवन के लिए जरूरी है वह वही नहीं जानता है पर मैं जानता हूं। और इसलिए मुझे उसे कुछ बताना है। ऐसी सब बातों में फंस कर रह जाउंगा अगर मैं यह मान लूं कि मैं किसी को कुछ बताने, सिखाने, समझाने के लिए लिखता हूं।

मैं सबसे पहले अपने लिए लिखता हूं और सबसे अंत में भी अपने लिए ही। वैसे ही जैसे मैं कुछ बोलता हूं तो खुद सुनता भी हूं। कान बंद करके भी बोलूं तो खुद को सुनाई देता है। मेरे लिए लिखना ऐसा ही है। यह अलग बात है कि वह दूसरों को भी पढ़ाई देगा। दिखाई देगा। पर वह मेरे लिए तो तब भी है जब वह लिखा नहीं गया है।

कई चीजें हैं जो मुझे बहुत आकर्षित करती हैं - मसलन, धूप, उजाला, रोशनी। अपने तमाम अर्थों के साथ और उनसे रिक्त होकर भी। धूप और देखना।

देखना। देखना अपनी नजर से भी और सबकी नजर से भी। चींटी की नजर से। और कुत्ते की नजर से। कुत्ते की नजर से कुत्ते को देखना और इंसान को भी देखना। जब आस-पास कोई नहीं होता तो कई बार मैं दो हाथों को भी पैर बनाकर चौपाया हो जाता हूं। इस तरह मैं एक कुत्ते की नजर और ऊंचाई से दुनिया देखना चाहता हूं। जब एक कुत्ता रोता है तो मैं कुत्ते की तरफ देखता हूं। और उसके ऊंचे किए गए मुंह की तरफ भी कि वो प्यास से बेहाल आसमान में बादलों की तरफ देखकर तो नहीं रो रहा। मैं कभी आसमान की तरफ मुंह करके नहीं रोया। मैंने आज तक कभी किसी दुख का सामना नहीं किया जिसमें मेरा यकीन जमीन से उठ गया हो। तो कुत्ते को रोते देखकर इस बात के अंदेशे से दुख भी पैदा होता है कि कहीं उसका जमीन से यकीन तो नहीं उठ गया। वह रात में रोता है तो इस बात का दुख होता है कि उजाले में रोता तो शायद उसे अपने आस-पास और जीवन दिख पाता। तब शायद कम रोता।

अगर उदाहरण से बात करूं तो धूप को समझने के लिए मैंने तरह-तरह की रचनाएं कीं। मैं मानता हूं कि एक रचना जब लिख ली जाती है तब ही कोई अंदाजा लगा सकता है कि वह किसके लिए है। कौन-कौन सी रचना किसके लिए है यह मेरे लिए बहुत ही मुश्किल सवाल बना रहा है। काश कभी मैं किसी रचना को लेकर इतने यकीन के साथ कह सकूं जितने यकीन के साथ कहता हूं कि ईश्वर जैसी कोई चीज नहीं है या कहता हूं कि रोटी सबके लिए है। पानी सबके लिए है। जमीन सबके लिए है।

पर धूप और छांव को लेकर मैं लिखता हूं तो मुझे लगता है कि फलां चीज इस उमर के बच्चे भी पढ़ सकते हैं - मसलन, धूप से बोली छांव, न तेरे पांव, न मेरे पांव।

मुझे लगता है कि इस कविता का मजा छोटे बच्चे यानी पहली, दूसरी के बच्चे भी उठा सकते हैं। इसके स्ट्रक्चर का। इसकी कहन का। इसके अर्थ को कैसे तय करेंगे? मसलन, कोई बच्चा इसे पढ़कर इसके ऊपरी ढांचे को पकड़कर एक और ऐसी राइम बना दे- गाय से बोली भैंस, चलो लगाएं रेस। तो क्या उसने अर्थ को पा लिया?

मैं एक लेखक के तौर मानता हूं कि अर्थ कोई बिन्दु नहीं है जहां पहुंच जाना है। बल्कि वह एक सिलसिला है। और दिलचस्प यह है कि वह सिर्फ उन चीजों को ही समझने का सिलसिला नहीं है जो उस कविता में हैं या लगता है कि हैं बल्कि वे सब चीजों को समझने का सिलसिला भी बनाती हैं। इसलिए बच्चों के लिए रचनाएं चुनते वक्त यह जरूर ध्यान रखता हूं कि क्या उस रचना से यह सिलसिला शुरू हो सकता है?

जैसे, पेड़ पर कोई रचना लिखी गई है तो पेड़ को समझने का एक अंतहीन सिलसिला होगा। पेड़ को समझने के लिए मिट्टी को समझना है, रंग को समझना है। धूप को समझना है। पानी को समझना है। और फिर इन सबको घटा कर पेड़ को पाना है। तो मुझे लगता है कि हमारा समझना एक-दूसरी चीजों के जुड़ाव से बनता है। जब हम रंग को समझते हैं तो थोड़ा-सा पेड़ को भी समझते हैं। जब हम मिट्टी को समझते हैं तो थोड़ा-सा पानी को भी समझते हैं। इस तरह से देखें तो किसी भी एक चीज को अंतिम रूप से समझना सभी चीजों को अंतिम रूप से समझने जैसा है। अर्थों की एक अनंत दुनिया में हम हर पल अपने काम का एक कामचलाऊ अर्थ लगाते हैं।

अगर इसी भाव को कविता में कहूं तो -

आकाश पर / मिट्टी पर / रंग पर / पानी पर / हवा पर
आरी किसी पर नहीं चलती / वह पेड़ पर चलती है और कटकर गिर जाते हैं
मिट्टी / आकाश / हवा / पानी / और रंग

इसी से मिलती जुलती एक रचना का वाकया भी दिलचस्प है।

धूप पर मैंने एक कविता लिखी -

धूप निकलती है / धूप के आगे धूप निकलती है
धूप को पकड़ो तो कुछ हाथ नहीं आता
पर धूप में खोलो मुट्ठी तो फिर धूप निकलती है

असल में यह रचना कैसे लिखी गई होगी यह बताना लगभग असंभव है। पर मैं याद करता हूं तो कुछेक सुराग मिलते हैं। मसलन, उस दिन मैं एक खेत में था। मई के दिन थे। तब मैं देख रहा था कि धूप इस तरह निकली है कि चारों तरफ वही है। हम पता बताते हैं कि फलां कॉलोनी से आगे या फलां शहर के बाद ये शहर आएगा। मगर यहां धूप का विस्तार ऐसा है कि धूप के बाद भी धूप ही है। धूप इतनी है कि उसके विस्तार के अर्थ को पकड़ नहीं सकते।

धूप को पकड़ो तो कुछ हाथ नहीं आता। पर धूप में खोलो मुट्ठी तो फिर धूप निकलती है। पकड़ में नहीं आती मगर आप चाहो तो मुट्ठी खोल के देख लो वहां धूप है। हालांकि मेरे इस अर्थ का कोई मतलब नहीं। कविता लिखे जाने के बाद उसका पहला पाठक खुद कवि है। वह उसे खुद तैयार होने के बाद ही मिलती है। और लिखने वाले की हैसियत एक रचना के लिए एक पाठक से ज्यादा कुछ नहीं है। इसलिए किसी किताब में पूछा गया यह सवाल अजब लगता है कि फलां कविता से कवि क्या कहना चाहता है?

पाठक और लेखक की अपनी-अपनी सीमाएं होती हैं। लेखक को पाठक की सीमा में दाखिल नहीं होना चाहिए। धूप निकलने के पहले तथा बाद में क्या होता है यह पाठक की टैरिटरी है। हमेशा एक अच्छी रचना में पाठक की स्पेसेज सुरक्षित रहती हैं। जहां वो रचना में शामिल होता है।

बच्चों के लेखन के मामले में यह छूट बहुत ली जाती है। बच्चे समझ नहीं पाएंगे।

यह बाल-साहित्य में काम करने वाले कई लोगों का राष्ट्रगान सरीखा है। जिसके लिए वे तुरन्त उठ खड़े होते हैं।

फिर भी कुछेक बातें हैं जो बच्चों के लिए लिखते वक्त ध्यान में रखी जा सकती हैं।

दुनिया का ऐसा कोई मुद्दा नहीं है और ऐसी कोई शय नहीं है जिस पर बच्चों के लिए लिखा नहीं जा सकता है। यानी बड़ों के लिए लिखना बल्कि कहना चाहिए किसी के लिए भी लिखना और बच्चों के लिए लिखना विषय के मामले में कोई फर्क नहीं करता है। लेकिन कहां से शुरू करना है कितना कहना है आदि बातें जरूरी हैं।

यह हमारी सीमा ज्यादा है कि हम बिना सरलीकरण किए, बिना सामान्यीकरण किए कोई बात ऐसे लिख सकें या कह सकें कि बच्चा भी समझ ले। यह बच्चों की सीमा नहीं है। कुछेक ऐसी बातें भी सुनने में आती हैं कि मसलन, भाषा सरल होनी चाहिए। लेकिन मैं सोचता हूं कि यह तो सभी के लिए ठीक होगी। अगर रचनाकार यह कर सके तो।

एक भाव को जब आप बच्चों के लिए लिख रहे होते हैं तो शायद आप पांच वाक्य खर्च करें।

उसे ज्यादा टुकड़ों में कहें। हो सकता है वही बात अगर आप बड़ों के लिए लिख रहे होते हैं तो एक ही वाक्य में कह दें।

ऐसा नहीं है कि पाठक का ध्यान रखकर रचना में कोई गड़बड़ी पैदा हो सकती है। ऐसा नहीं है। बल्कि कहना चाहिए कि ऐसा कर पाना किसी भी रचनाकार की कुव्वत से बाहर की बात है। अगर हम सात वर्ष के बच्चे के लिए कोई रचना लिखना चाहते हैं तो वो बच्चा कौन है? हर बच्चा अलग होता है। बल्कि हर बच्चा हर थोड़े समय बाद अलग होता है। असल में हम बच्चों से प्रेम करके, उनके साथ समय गुजार कर उन्हें समझने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन यह समझ किस तरह हमारे लेखन में काम आएगी यह कहना बहुत मुश्किल है। एक वाक्य बहुत सुनाई पड़ता है कि बच्चा बनकर लिखना चाहिए। मुझे नहीं लगता है कि मैं बच्चा बनकर लिख सकता हूं। बल्कि मुझे लगता है कि कोई भी रचनाकार बच्चा बनकर नहीं लिख सकता है। बच्चे की नजर से देखो और बच्चे की नजर से लिखो ...मुझे ऐसे जुमले समझ नहीं आते हैं। और इस पृथ्वी पर अगर कोई ऐसा व्यक्ति है तो मैं मंगल के किसी आदमी को देखने से

पहले उसे देखना चाहूंगा। यह भी लगता है कि कोई भी बच्चा, बच्चा बनकर नहीं रहना चाहता। वह बड़े हो जाना चाहता है। और इस दुनिया में अपने फैसले खुद लेना चाहता है। बच्चों की यह तासीर समझना बच्चों के लिए लिखने में ज्यादा मददगार हो सकती है।

जैसे एक धारावाहिक हर बार आगे बढ़ने से पहले पुराने वाकए मोटे तौर पर याद कर लेता है जिससे कि नए जुड़े दर्शकों को कहानी का अंदाजा लगे और पुराने दर्शकों को वह ताजा हो जाए ...इस बात की सीमाएं हैं पर मुझे लगता है कि एक बच्चा जब बड़ा हो रहा होता है तो काफी कुछ हम अपने हजारों सालों के जीवन की कथा दोहराते हैं। एक बच्चा पत्ते को देखता है तो ऐसे जैसे पहली बार किसी व्यक्ति ने पत्ते को देखा होगा। उतना ही ताजा देखना। सूरज के बनने की वही कहानी हम उसे सुनाते हैं - कि एक बुढ़िया जब झाड़ू लगाती थी तो सूरज से उसका सिर टकराता था। तो उसने उसे आसमान में धकेल दिया। बच्चा कभी सोचता होगा कि मैंने आने में थोड़ी देर कर दी। वह इस बात पर अचरज में डूब सकता है कि ये आसमान, ये चांद, सूरज...। हम सब समझते हैं। पर हम जैसे दोहराते हैं वही कहानी। और दूसरी बात यह कि ये जो आसमान पूरे समय सिर पर टंगा रहता है। इसके बारे में बच्चे को कैसे बताएं। कल्पना के लिए अनुभवों की उतनी जरूरत नहीं पड़ती जितनी यथार्थ की बातें बताने को उसकी जरूरत पड़ती है। कल्पना अपना अनुभव खुद बनाती है। और इस तरह अनुभव बनकर एक कल्पना यथार्थ में आना-जाना शुरू करती है। लेकिन रचनाएं कल्पनापरक या अन्य जो भी हों खुद भी अपना एक अनुभव बनाती हैं। तो बच्चों के लिए लिखते वक्त कहीं मन में यह बात जरूर रहती होगी कि वह रचना ज्यादा अनुभवों की मांग पाठक से न करे बल्कि खुद एक अनुभव बन सके।

छोटे बच्चों को देखता हूं कि उनके सामने दुनिया जादू की तरह खुलती है। छोटी-छोटी चीजें। मसलन, नल की टोंटी से पानी आना। एक बार खोलके देखी तो पानी आया। तो नीलू ने पूछा - ऐसा करने पर पानी क्यों आता है? क्या हर बार ऐसा करने पर पानी आएगा। फिर मैंने देखा उसने तीन-चार दिन अलग-अलग समय टोंटी खोलकर देखा पानी आ रहा है कि नहीं। मैं उसके सवालों पर सोचता रहा। क्या सचमुच टोंटी खोलने पर हर बार पानी आता है। क्या हर घर में टोंटी खोलने पर पानी आता है? मुझे अपने लेखन में यह चुनौती लगती है कि यह जो ताजगी है सोचने की, देखने की ...आदतन जीवन देखने की नहीं, जीने की नहीं... ताजा जीवन रचने की। क्या मेरी रचनाएं उस पर कोई पुल बना सकती हैं। क्या मैं इतना ताजा लिख सकता हूं। देख सकता हूं। जीवन में एक फूल, एक तितली, एक नल, एक बाग, एक खिलौना जिस तरह से संवाद करता है और क्या उतनी संभावनाओं से भरी रचना मैं लिख सकता हूं।

इस सिलसिले में दो छोटी-छोटी रचनाएं साझा करता चलता हूं। दोनों का भाव लगभग एक ही है। एक गद्य में है और एक कविता है।

नवीं की परीक्षा देकर मैं रिजल्ट के इंतजार में था। प्रेम की एक छोटी-सी खिड़की खुली थी। बड़ी कशमकश थी। कुछ सूझ नहीं रहा था। सूखे पत्ते हवा के छोटे-छोटे भंवरों में फंस रहे थे। मैं घर से निकला। और खेतों की मेड़ों पर दौड़ लगा दी। तेज और तेज दौड़ रहा था। पांव में चप्पलें थीं। दौड़ते-दौड़ते ही मैंने चप्पलें उतार फेंकी। हवा से बातें करना मैंने उस दिन जाना। मैं बेतहाशा दौड़ रहा था। जैसे दुनिया को पीछे छोड़ दूंगा। मैं खुद से ही भाग रहा था। और खुद का ही पीछा कर रहा था। दौड़ते-दौड़ते जब मैं थककर चूर हो गया। निढाल होकर नहर पर बैठ गया। तलुए छिल गए थे। उनसे खून चू रहा था। मैंने खून को उंगली में लेकर उसे पास से देखा। थोड़े दिनों बाद मेरे तलुए में नई चमड़ी आ गई। जिसे सिर्फ मैंने देखा। जिसे सिर्फ मैं ही देख सकता था।

एक बूंद आई / आंख मूंद आई / उसे ढूंढ़ने फिर / बूंद-बूंद आई

ये एक ही भाव थे मगर एक बड़ों के मुफीद माना गया और दूसरी रचना को पहली बारिश नाम का शीर्षक दिया। इस शीर्षक से यह रचना फौरन बच्चों की रचनाओं में जाकर शामिल हो गई।

अगर मेरे वश में हो तो मैं छोटे बच्चों के लिए भी ऐसी रचनाएं लिखना चाहता हूं जिसमें हमारा समय हो। अपने पूरे छरहरेपन के साथ।

इस सिलसिले में मैं बहुत सोचता विचारता रहा हूं। इसी क्रम में कभी कोई रचना आ जाती है। जैसे, एक दिन फल की दूकान पर पहुंचा। सितम्बर का महीना था। बक्सा भर चौसा आम रखे थे। मुझे बहुत ताज्जुब हुआ। मैंने फल वाले से पूछा - भाई ये चौसे का सीजन तो खत्म हो गया। वह बोला, ये कराची का चौसा है। थोड़ी देर से आता है।

मुझे लगा यह बात कितने कम लोगों को पता होगी कि पाकिस्तान से हमारे यहां चौसा भी आता है। बारूद गोले आते हैं, आतंकवाद की नर्सरी है - आदि खबरों के बीच यह एक बात मैं लिखना चाहता था। खासतौर पर बच्चों के लिए। मैंने कभी पाकिस्तान से आया गोला बारूद छूकर नहीं देखा। न ही मैं अलग से पता कर सकता हूं कि यह गोला बारूद पाकिस्तान से आया है। बल्कि मैं किसी भी गोला बारूद को अलग-अलग करके नहीं देख पाना चाहता। मगर मैं यह आम छू सकता हूं। इसकी शहद भरी खुशबू महसूस करना चाहता हूं। यह आम है तो कोई पेड़ होगा। जो पाकिस्तान में होगा। एक बाग होगा। किसी ने आम सहेजे होंगे। ...बचपन में पैसे नहीं होते थे तो किसी दोस्त को बिना टिकिट लगी चिट्ठी भेज देते थे। वह बैरंग चिट्ठी ले लेता था। और उसे टिकिट के पैसे चुकाकर छुड़ा लेता था। ये आम मेरे जैसे पड़ोस की उम्मीद और यकीन लिए बैठे व्यक्ति के लिए एक बैरंग चिट्ठी ही है। जिसे मैंने उसके टिकिट की कीमत देकर छुड़ाया और देर तक आम को हाथ में लिए पढ़ता रहा।

लिखने में होना मेरे लिए इसी तरह से कुछ होना है। सीआईई का शुक्रिया कि मुझे इस अवसर पर लिखने में होने के बारे में बात करने का मौका दिया। बहुत-बहुत शुक्रिया। ◆

(यह व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (सीआईई) में दिया गया था। इसे उपलब्ध करवाने के लिए हम सुशील शुक्ल के आभारी हैं।)

सुशील शुक्ल : लम्बे समय तक विज्ञान पत्रिका 'चकमक' के संपादक रहे हैं। वर्तमान में शशि सबलोक के साथ मिलकर 'प्लुटो' व 'साइकिल' जैसी पत्रिकाएं संपादित कर बाल-साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

विज्ञापन

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

लाइब्रेरी एडुकेटर सर्टिफिकेट कोर्स 2019 (हिन्दी)

महत्वपूर्ण तारीखें

फॉर्म जमा कराने की अंतिम तिथि : 29 मार्च, 2019
कोर्स की शुरुआत : 17 मई, 2019

पराग, टाटा ट्रस्ट्स का लाईब्रेरी एडुकेटर्स कोर्स अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है। यह पुस्तकालय कर्मियों, शिक्षकों व उन सभी लोगों के लिए है जो बच्चों व किताबों के साथ काम करते हैं। यह कोर्स प्रतिभागियों को सक्रिय एवं रचनात्मक पुस्तकालयों की कल्पना व संचालन में समर्थ बनाता है और साथ ही यह बच्चों के साथ प्रभावी लाईब्रेरी सत्र डिजाइन करने के उनके कौशलों को विकसित करता है।

लाईब्रेरी एडुकेटर सर्टिफिकेट कोर्स 2019 के लिए पराग आवेदन आमंत्रित कर रहा है।

- इस कोर्स की अवधि 7 माह है और यह 17 मई, 2019 से शुरू होगा।
- इस कोर्स में संपर्क (face to face) एवं स्व-अध्ययन (self study) के घटक होंगे।
- 3 संपर्क घटकों की कुल अवधि 13 दिन (5+5+3) होगी।
- स्व-अध्ययन अवधि में ऑनलाइन असाइनमेंट्स और एक फील्ड-प्रोजेक्ट शामिल होंगे।
- इस कार्स के शिक्षण का माध्यम हिन्दी है।
- कोर्स में सैद्धांतिक और प्रायोजिक आयामों का समावेश है।
- कोर्स के दौरान प्रतिभागियों को मेंटर का लगातार सहयोग मिलेगा।
- बच्चों के बेहतरीन चुनिन्दा साहित्य के अध्ययन का मौका भी मिलेगा।

कोर्स प्रोस्पेक्टस व आवेदन फॉर्म यहां से डाउनलोड किए जा सकते हैं : http://paragreads.in/lec-2019-hindi
अधिक जानकारी के लिए कृपया हमें इस पते पर लिखें : paragreads@tatatrusts.org | 9818140147